

DPN 5597

Title : कुमारी पुजा /
KUMARĪ PUJA

Run. No. 6288

Cat. No.

Micro. No.

Subject Religious ritual
पूजा विधि

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / Newa direction

Size in cms. 16 x 11

Folios 48

Lines (in a page) 6/8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

सिद्धि मान सिंह देवरा
Siddhi man Singh Devra

Date: NS / SS / VS / KS 990

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Two Mandal figure, Mantra monogram

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

श्री गणेशाय नमः । चामुण्डा यागाच्यनं ॥ सुय्यर्चि ॥ आच्य सर्व कार्यादी ॥
गुह नमस्कार ॥ न्यासाद्य पात्र पूजा ॥ आल पूजा ॥ मालसा ॥ मालनी पठेत् ॥

Post colophon समाप्ति वाक्य

देवस्वके न्यास लिखामे ॥ कलि विसर्जने ॥ सूर्य साक्षी ॥ इति पुण्यो पूजा ॥

श्रीनेपाल सम्वत् १९९० कार्तिक शुक्लया द्वादश्या शुक्लवा ॥ १० ॥ देव

सिद्धिमान सिंहन अर्चो देस पूजा यायत बोय धुमका जुलो, धुम ॥

श्रीवसुधामार्गकोमार्गी-पुत्र
चक्र-कात्यायनी-पुस्तक
श्रीपूजा-कर्मसंग्रहपूजा ॥

श्रीगणेशायनमः॥ नमो भगवते वासुदेवाय॥
सूर्यार्घ्यं॥ अर्घ्यं सर्वकार्यार्थं॥ गुणनमस्कान्
॥ न्यासार्घ्यपादपूजा॥ आत्मपूजा॥ मालसा॥
मालनीप॥ पञ्चवत्यादि॥ समयकृत्या
नव्यं॥ श्रीसम्बर्ग॥ उदवतवालापूजनं॥
अथविलम्बासः॥ उज्ज्वलदयादिषु॥ अथ
दि॥ आसन॥ उज्ज्वलादि॥ अथनाय

नि॥ उष्ट्रावतुमादेवीसमाप्त
प्रियं॥ अथ॥

पापूजा॥ ॥ शुक्लि॥ उज्ज्वलचौचौचौ श्रीवा
सुदेवीपापूजा॥ ३॥ वलि॥ यानि शुक्ल
॥ विन्द॥ सिद्धिवापूजा॥ उज्ज्वलसना
यपापूजा॥ ध्यानं॥ उज्ज्वलपुगास्तिकवभहा
ननविता॥ निष्कव्युक्तादनी॥ लीलालाल
पुकाभतीकूनसना॥ निरुगमिदमिथी॥
गल्लोलम्वितकडकमपचनो॥ अहूनच

यानिपुस्तगासिपूजा॥ इतिपुस्तगासिपूजा॥
नाभिनेकव॥

[illegible]

नद्धमीमहिषकागककुंटादिकंम शुपूजातर्प्यर्षिरूप्यकुखाहा॥पशु

ये पापू ॥ ३ ॥ नैऋत्यं श्रीसिद्धिचामू
 ल्याये पापू ॥ ३ ॥ व ॥ लि ॥ यानि मू
 दा ॥ विन्दुविय ॥ ॥ नैऋत्यं अस्य चामू
 मरुस्य भिवऋषय नमः ॥ गयपीकन्दम
 नमः ॥ श्रीचामूलादेवताये नमः ॥ क्रीवीज
 यनमः ॥ नमः ॥ कृत्य नमः ॥ स्वाहा कील

कायनमः॥ अहिसिद्धयः कथविनिथागः
॥ ॥ नमः॥ अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं
मं नं नीली स्वाहा॥ अं अं मं मं मं मं मं मं मं मं मं
द॥ अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं
ली वमद॥ अं मं कं नं नं पृष्टा ली अं अं
यरुद॥ ७ वं हृदयादि॥ अं वं हृदयायनमः
॥ ॥ अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं अं

नमः श्रीगुरुवचनं

नकायलदलामी वहुजीपनमधनी॥
खर्गं वदहासं च चवर्कदक्षिणकन॥ वा
भचर्मं मृत्कार्यं उर्द्धावातावतः ४ पुनः॥
दधती मृत्मालाश्रुमाधुचर्माम्बनाधनी॥
कृष्णदीर्घदंष्ट्राच अतिदीर्घातिरीषली
॥ लालजिह्वातिम्रनकनयनाकानरीषली
॥ वतालवाहनासीता विष्णुनिधवतोनना
॥ ध्यानपूय्यी आवाहनादि॥ पाशपतिष्टा॥

मलिकमहाकालिमहामाथमहाइ

ॐ कौं कौं ॐ कौं चामुत्तये प्रभातं हृष्टाभा
उर्वजिर्वहस्किरः सर्वद्वियाति वासनच
कृष्णजिह्वा जीवहृष्टा गत्यसुखी चिनीति
सुखाहा ॥ दवीस्तुतवर्गगतन्यासः ॥
पाद्यादि ॥ ॥ श्रीरुति ॥ ॐ कौं चामुत्तये नमः
स्वाहा ॥ ३ ॥ विन्दुजिको नमः कृष्णदलच
उर्विभतिदलच उन्नमुदान ॥ ॥ जिको ॥

स्वर्जलोके सगच्छति ॥ ३ ॥ चलि के वा

ॐ वीन चामुत्तये नमः ॥ ॐ वनदुर्गये नमः ॥
॥ ॐ नवदुर्गये नमः ॥ ॥ सका ॥ ॐ दुर्गये
नमः ॥ ॐ लीमाये नमः ॥ ॐ भूकं तथै नमः
॥ ॐ शमथै नमः ॥ ॐ नन्दजाये नमः ॥ नका
दीताये नमः ॥ अष्टदल ॥ ॐ कृष्णादि ॥
दलाकन ॥ ॐ ॐ नृदचलादि ॥ दला ॥
॥ ॐ हं रुयादि ॥ च उर्विभतिदलविष्णुमा

नमिजायत ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तं

पादि॥ अंदिक्कमायायेनम॥ अचतये॥
 अं वृथे॥ अं निदाये॥ अं कंधाये॥ अं काया
 ये॥ अं मन्त्रे॥ अं हृक्काये॥ अं कान्त्रे॥
 अं कान्त्रे॥ अं लङ्काये॥ अं मन्त्रे॥ अं यद्वा
 ये॥ अं कान्त्रे॥ अं लङ्काये॥ अं वृक्काये॥ अं मन्त्रे॥
 ॥ अं धृक्काये॥ अं द्याये॥ अं पुष्पे॥ अं पुष्पे॥
 अं मन्त्रे॥ अं कान्त्रे॥ अं व्याक्त्रे॥ चतुनम॥

कर्तृपापायशुद्ध
 कर्म॥ पूर्वजन्म

अं अं अं सिताकृते नवायपापू॥ अं वी॥ अं नृनृ
 हं॥ अं चंचलं॥ अं कंकाधरं॥ अं उं उं
 हं॥ अं कंकाधरं॥ अं हं हं वृक्षं॥
 अं संहानं॥ चतुका॥ अं कंकाधरं॥
 लाय॥ अं वीं वृक्षं॥ अं गं गं पत
 य॥ अं यो यो गिनीया॥ दाना॥ अं वृं द्याय
 नम॥ अं नृं नृमय॥ अं मृं यमाय॥ अं कं

चतुर्लोक
 को नृपति
 पित्रजसंवा

११

[illegible]

ॐ गृह्णामिदं वसिष्ठ उवाच ॥

92

त० सर्ववीन। सिद्धिं नहि २ कूं हृद् नम० स्वा
हा॥३॥ उग्रचक्रायामूलकममूलनिर्वाण
पूजा॥ अथ वलिमुत्प॥ चन्दनादिजकृतस्वा
नतन्त्र॥ धूपदीपनैवद्यन्त्राय॥ दवंतय्य
वी॥ पुतिष्ट्या॥ यावद्वाहस्करोति॥ ॥ जाप
॥ कौं॥ श्रीकौं॥ ॥ हं॥ स॥ च॥ ॥ मुं॥ हूं॥
॥ ॐ कौं चामुक्तये नम० स्वाहा॥ ॥ हूं॥ हूं॥ हूं॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ दंडपं गृहाण स्वाहा ॥ म ल द य कं स्वा
 न त य ॥ सु ॥ श्री गुरु नमः ॥ अख ल
 म ल ला क र्नी ॥ वन्द सदा ॥ श्री सा सना ॥ सि न्धु न सी
 ॥ उ काना ॥ चामु ल च ल नू पा प्र क रित द क्ष ना
 धान दं द्या कना ला नो डी नि मां स द हा कलि
 त मि ष मि षा काल क र्णी ति न ग दं द्या नी मू
 ल माला ह नि ग ल मु नि हि अ नू ति ह मि ती गी
 ख द्वा गि अ दृ ह स्ता य स उ म म नि पू च र्चि ता ध

कर्तृगृहीत्वा ॥ अमुककामशीचक्रिका

न सी स्ता ॥ उ क्तानी क म ल द ॥ म ल य म ॥
 अ मान का ॥ श्री स च र्च ॥ क म मु ति ॥ य थ व
 क्य ॥ अ ग र्गि धा दि ॥ न म स्का न या य ॥ ॥ ग त
 प शु या ग ॥ ख द्वा ग र्ग ॥ ख द्वा पु का ल्य ॥ च न्द न
 दि ह य र्ग ॥ उं श कालि र्व द्वा व नी ला ह द द्वा य
 न मः ॥ उं श उ मा म ह व्वा ना य न मः ॥ उं श उ क्तानी
 त्रि कु म ह व्वा ना य मि व र्ग कि स हि ता य ख श्वा दि
 म व्वा वा सा न न मः ॥ सु ॥ उं श ख श्वा य ख

कलयस्वाहा ॥ धूपदीप ॥ जलमर्त्य ॥

लनाभयभक्तिकाय्यायितस्यन॥ पशुकंदत्त
याश्रीर्षीखड्गनाथनभाम्भुता॥ वृत्तिखड्गपूजा
॥ ॥ ततःसुतकनपशुदेव्यसंस्कार्य॥ अ
र्धादकनपाकली॥ कवचनावगुठनी॥ धनुस्
दामृतीकया॥ मण्डीरानपूजनी॥ चन्दनादित्त
वली॥ पशुकर्णमुकुप॥ ॥ ॥ ॐ पशुबाम्भय
विमहविष्णुकर्माध्वीमहितन्नाजीव॥ पु

पशु
पूजा
विमह
विष्णुक
कर्माध्वी
महित
न्नाजीव
॥ पु

श्रीगणेशायनमः॥ ॥ पशुभाम्भयनचामुखा
यागं कृत्वा तताकोमानीपूजनी॥ अथप्रादिय
थावास्तवसूर्यार्घ्यं॥ गन्तमस्कानी॥ न्यासार्घ्य
पाणपूजा॥ आत्मपूजा॥ मालतीप॥ ॥ पशु
वलि॥ समयकाय॥ तर्प्यर्षी॥ शिवलि॥ नवा
स्मा॥ आसनशुक्लि॥ ॥ तताविलामन्या

स०॥ जे० काँ हृदयादि॥ आध्वनादि पृथ्वा स
न॥ जे० मयूना सनाय पापू०॥ ध्वनी॥ जे०
वन्धूक पृथ्वी संकाशं॥ तठि क्काटि समपरा॥ हू
य्य विविनि रादवी॥ हूरी यत्प्रहसिता नना॥ वा
लरूपा महादवी॥ कोमानी प्रसुतूपिणी॥ ति
रा च उरुजा काय- पूरुलिङ्ग किं हू उ कं

॥ पद्मनागमलिमालि. मूकालंकानहवि
त॥ शिखिनागसमानूय. विद्यार्कभक्ति
कानिधी॥ सोहाग्यसंपदालक्ष्मी. मायू३पू
७य॥ ४धियै॥ सर्वकामभवनीदेवी. सर्वव्या
पीमहेश्वरी॥ आगच्छकृष्णिताचक्र. उला
क्षसृष्टिकानिधी॥ ध्यात्वादेवीसदातोमि

१५
कोमानी सर्वमङ्गला ॥ ध्यानपुष्पं तमः ॥
आवाहना ॥ ऐं श्रीं कोमानी देवीं ब्रह्मागच्छ
२ ब्रह्मतिष्ठ २ श्रीं ब्रह्मसन्निहिता एव २
ब्रह्मसन्निद्धा एव २ मम पूजा गृहा ॥ क्लृप्त
वर्गवर्तनं तान्त्रयं दिग्वन्धनं भक्तिमूर्धा द
र्भय ॥ पाद्यार्घ्यं ॥ ऐं श्रीं कोमानी देवी ॥

२०
गत्यायं तमः ॥ उधार्यः स्वाहा ॥ ब्रह्ममाचमति
यै स्वधा ॥ ब्रह्मस्लानीयं तमः ॥ ऐं श्रीं कोमा
नी देवी ब्रह्मचन्दनं वीलपतनं वी श्रीं न हस्म
वीनमाहती वीनारुतपुष्पं तमः ॥ ॥ श्रीं
लि ॥ ऐं श्रीं चैकैर्जैर्जैर्को श्रीं कोमानी
काये श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं लवागीश्वरी

ॐ अस्य श्री उपवेष्टा मन्त्रस्य महाप्रदमः षिः पकि कृत् ४ श्री उप

कूलथा एव श्री कूलकोमानि विष्णुपापू ॥

३॥ वलि॥ विन्द॥ ॐ ॥ कौशिकी कर्कनी कृदिक

लिलाक सुधाधिप तथ सहकोमानी विद्मह

आर्कददस्व म स्वाहा॥ वलि॥ विन्द॥ भक्ति

मृद्रीदर्भय ॥ उपवेष्टाया मूलविद्या॥ न्या

स ॥ ॐ ॥ मृत्पुह न भस्मा य हृद् ॥ ॐ ॥ कौना

चक्षा स्वता कौवीरं स्वाहा भक्ति ॥ ॐ ॥ कीलकं नदीय उपवेष्टा

पूजन विनीयाग ॥ ॐ ॥ मृषादिनाम ॥

५ प्रदं अंगुष्ठा एन म ॥ ॐ ॥ कूर्तनी एन

स्वाहा॥ ॐ ॥ त्रिपु मर्दनी मध्व मो एन वषट्

॥ ॐ ॥ कूर्तनी सदान ह २ अनामिका एन ह

॥ ॐ ॥ एन मी ह म ४ कतिष्ठा एन वो षट् ॥ ॐ

५ मृत्पुह न कन तन पुष्ठा एन अस्मा य ह

ह ॥ ॐ ॥ कौना जपद ह दयाय न म ४ ॥ ॐ

उपवेष्टाया मूलविद्या
उपवेष्टाया मूलविद्या

गङ्गाभिर्नमस्वाहा॥ निप्रमर्दनीभिस्वाये
 वषट् ॥ ॐ गङ्गा सदानकरकवचायट्
 ॥ ॐ गङ्गा मां शंसन्तं गङ्गायायवोषट् ॥
 ॐ गङ्गा मृत्युहन्त्रायट् ॥ इति न्यासः ॥
 आसना ॥ ॐ गङ्गा आधानमकथपापू ॥ ॐ गङ्गा
 नकासनायपापू ॥ ॐ गङ्गा स्नानायपापू ॥

ॐ गङ्गा नानायपापू ॥ ॐ गङ्गा पद्मायपापू ॥ ॐ
 गङ्गा फणायपापू ॥ ॐ गङ्गा कमलायपापू ॥
 ॐ गङ्गा कर्णिकायपापू ॥ ॐ गङ्गा पद्मासनायपा
 पू ॥ ॐ गङ्गा सिंहासनायपापू ॥ ॐ गङ्गा महिमा
 सनायपापू ॥ ॐ गङ्गा शृङ्गासनायपापू ॥
 ॐ गङ्गा निशृङ्गासनायपापू ॥ ॥ ध्यानी ॥

२५ ॐ ग उग्रचक्र महादेवी. ध्याय ह ग व ती
मिवा ॥ तफ चामी क ना हा सा. विद्युत्काटि
समपरा ॥ पीतवक्त्र सुक्ता हा ग. तिनग
चात्रहासिनी ॥ किनिटी कुल्ला कानी. क
यूनामनि नोपना नलमाला विचित्रल.
हाउमाला वल विग ॥ अष्टादश गुजा का

२६ का. दिव्य वस्त्रां कुल्लसिता ॥ खड्गवाल कथा
चक्री. वज्रा कुल्लवनाधन ॥ उमत्रंभूलपा
उ. दक्षिण नविनाजित ॥ हृदकंधर
हस्त. गदा घण्टा सुलभरित ॥ पार्श्व तर्ज
निहस्त. खडा कुकभपाशक ॥ विन्दुम
डा तथा सिद्धि. सिंहसना पत्रिस्तिता ॥

३) उर्वंश्वात्वा महादेवी. महाएगवती नभा
 मुता ॥ लघा ४ षा ७ ग ह सु ऋ ख दा ऋ म
 र्क वि ना ॥ रु द च ण प्र च ण च च ण प्र
 च ण ना यिका ॥ च ण च ण व ती चै व च ण
 रू पा ति च णिका ॥ न व मी चा ग्र च ण च म
 ल्य स्का ग्रि प्र हा चि ता ॥ ना च ना हा नृ ण क

क्रा. नीलाशुक्लाच. धूमका॥ पीताचपाञ्च
 लाक्ष्या. चात्रीठस्त्राहनिस्त्रिता॥ महिषा
 थप्रमानं. तत्त्वस्त्रिनवचाकिराक॥
 स्त्राप्याष्टनद्विर्जनि. चाग्रचक्षुर्दिहि
 कमा॥ उवन्मत्वा महादेवी. महात्मा
 वतीनमास्तुत॥ ध्यानपुष्पीपादकांपूज

२८

यामि॥ ॥ॐ शुभं उग्रचक्रायै स्वाहा ॥
 २ ॐ हतिष्ठ २ ॐ हसनिहिताएव २ ॐ
 हसनिष्ठोएव २ मम पूजागृहाय ॥ ॐ अव
 गुणैः नातगुणैः दिग्बन्धनैः यानिमुद्रा
 दर्शय ॥ ॐ शुभं उग्रचक्रायै नमः स्वाहा
 नमः ॥ नमोऽर्घ्यं स्वाहा ॥ ॐ दमाचमनी

३०

यै स्वाहा ॥ ॐ दस्त्रातीर्यनमः ॥ ॐ शुभं उग्र
 चक्रायै ॐ दचन्दनं वीतपनी वीनहस्म
 वीनमाहनी वीनाकृतपुष्पनमः ॥ ॥
 पूजनं ॥ ॐ महाकालाय पापपूजा ॥ वलि ॥
 विन्द ॥ दद्यादकिल ॥ ॥ मल्लप्रभुलि
 ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ शुभं उग्रचक्रायै नमः

नीरुंरुं सदानकरत्वांमिं स० मृत्पूजन
 नम० स्वाहापापू० ॥३॥ उर्ववलिंगृकर
 स्वाहा ॥ नै० नम० श्रीकौचलुग्रायनम
 ० श्रीकौपापू० ॥ नै० श्रीरुनवानन्द
 श्रीमहाविद्यानाथ ॥ श्रीश्वरीदामो
 श्रीउग्रचक्रायपापू० ॥ देव्यामु

वामा ॥ ॥ अष्टपत्र ॥ गलपूजनी ॥ नै०
 अर्जुनचक्रायपापू० ॥ नै० रुंरुं प
 चक्रायपापू० ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू०
 ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू० ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू०
 ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू० ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू०
 ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू० ॥ नै० रुंरुं चक्रायपापू०

पू०॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धूपदीपवलिगुणश्रवणार्किकरश्मि
 हा॥ याति मुद्रादिर्मय ॥ विन्द ॥
 गता कात्यायनी पूजनी ॥ नमः ॥ ॐ नमो

कोसल दयाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कन्यासु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यासुनाय पापू ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नीमहादेवी हमन्मामाकनूपिणी ॥
 सर्वालक्षणलक्षणच पीनान्नपथा

धना॥ कालाकालिगमध्वरूपा॥ कावेकालि
तविग्रहा॥ दादलोतागुजादवीवामदीवि २
धनिनी॥ खड्गवाचकधमकि॥ शिखलपु
कददिले॥ हलध्वलदुर्गपार्श्व॥ कृभनवा
मककना॥ सिंहासनसमानूढा॥ महिषाया
दङ्गणी॥ भूलकदचघानानि॥ कावेच

२५
निघातनी॥ ध्यायमानासदादवी॥ स
र्वभद्रकरीकनी॥ जयाद्यादवतादृष्टा
काशायनीनमामुता॥ ध्यानपूर्यपापू
॥ ॥ ॥ आवाहन॥ ॐ नमो भगवते
काशाय नमो ब्रह्मागच्छ २ ब्रह्मतिष्ठ २
ब्रह्मसन्निहिता एव २ ब्रह्मसन्निद्धो

एवमममपूजागृहात् ॥ ह्रस्वगुणं
 गानयय दिग्बन्धनं यानि मुद्रादर्थय
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो
 भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते
 वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते
 वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३८ पत. वीनहस्म. वीनमाहनी. वीनारुत
 पर्वतमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 महाइक्ष्वाकुचलिकायाय नमो ॥ ३॥
 वलि ॥ यानि मुद्रा ॥ विन्द ॥ गताङ्गादि
 पूजनं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो
 भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गायैपापूग॥ उँगमुँ अपनाजितायेपा
 पूग॥ उँगमुँ ज यू मयेपापूग॥ उँग
 मुँ मू यू नयेपापूग॥ उँगमुँ मोह
 यू नयेपापूग॥ उँगमुँ आक यू वये
 पापूग॥ उँगमुँ स४ यू श्रीमहाइजव
 शिकायायनये सर्वग करुणार्थवलि

गृहस्वाहा॥ विन्द॥ श्रुतिकायायनी
 पूजा॥ ॥ तगायुचनवनीपूजनं ॥ न्या
 स४॥ उँगत४ अमुयकू॥ उँगता अकु
 ष्ठायातिम४॥ उँगता तईनीयास्वाहा
 ॥ उँगता मध्यमायावयद्र॥ उँगता अना
 मिकायाई॥ उँगता कतिद्यायावी

४१

वद॥ उँ१ न४ कनकलपुष्पाख्यं शुक्रा
 यरुद्र॥ उँ१ नौ हृदयाय नमः॥ उँ१
 नौ सिंहासनाय॥ उँ१ तुंगिखायै वद
 द्र॥ उँ१ कवचाय ह्रीं॥ उँ१ नौ नग्या
 यवो वद॥ उँ१ न४ शुक्राय रुद्र॥ ॐ
 तिन्यासः॥ ॥ आसना॥ उँ१ आक्षना

४२

दि०॥ उँ१ सिंहासनाय पापू१॥ उँ१ म
 हिषासनाय पापू१॥ उँ१ शुक्रासनाय
 पापू१॥ उँ१ निशुक्रासनाय पापू१॥
 ध्वनी॥ उँ१ तुंगव्यनी महादेवी नमा
 मिनिप्रघातनी॥ गतिमीपुष्यसंकासा
 कर्त्तृन्मन्त्रविचिक्त्य॥ सर्वालिङ्गान

मयूका. हाउमालावतं विनी॥ अष्टादश
 उजाकाना. पीतवक्ररुतात्रहा॥ खम
 अकिंतथावा. मकुषं मुकुलानिच॥
 वक्रा. वगलाका. चक्रमूलपूदहि
 ॥ रुटकंपागम. तर्कनीदप्यर्षी
 धजा॥ उमरुला. तुलका. धनयदा
 उग्रवलायाचक्र.





अथ प्रतिपदादि स्थापन विधिः ॥ गणदीपाधकः कृतनिष्क्रिय
 उद्गासनवद्वपश्चासनापविष्णुस्ववासरागनिष्क्रियविधानत
 कलर्षि स्थापयित्वा गत्कलम् दक्षतगि गत्विताचम्यग्नितम
 स्नानप्राप्तयामि श्रद्धादिकनव कुमिन्यासी विधाय ॥ प्राक
 नी जलनहमि प्राकथय ॥ ॐ नमः पूरुषं भस्माय रुद्र ॥ कृष्ण
 न हृन्महर्षिर्ग ॥ ॐ नमः कौनार्य प्रदहृदयाय नमः ॥

गणमिदनादि नरुता उग्रचक्राया यत्कीलखत ॥ तस्मिन्
 कलाजापुष्पादिकी क्रिप ॥ उग्रचक्राया मूलनपैक
 दद्यात् ॥ तस्यैक पूर्ववत्पुष्पेरीलखताजापुष्पादिकी नि
 क्रिप ॥ यवान्यादाय प्राकनी जलनप्राकथय ॥ ॐ नमः
 पूरुषं भस्माय रुद्र ॥ कृष्णतगत्त ॥ रुद्र ॥ अकगु
 र्व ॥ रुद्र सदानकर कवचाय द्वा ॥ निनीकर्ष ॥ त्वामिदं
 सः नमः पूरुषाय वीर्यद ॥ धुनमडाव ॥ उग्रचक्राया मूल
 नाद्या उग्रगवाने जलपैकापनियवानवापथ ॥ अष्टी

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30

35



वरुण॥ इति यवान् वि कीर्य कलः अदकन सिचिनी॥ वं अमृत
 जलायन म॥ पंकनाकाद्य पूर्ववत्युक्तं विलेख्य लाजाय
 व्यादिकीति क्रिय्य कृष्णान् सृग्मन् उग्रचक्षुषा मूलमक्त
 मष्टाङ्गनं गवान् जयदिति पादस्त्रापनं॥ ॥
 जलः अधन॥ आचन॥ सूर्यार्घ्यं॥ अं अश्यादि॥ अमृक
 रमणाय नमः स्या मृकनाम्नः सकलपारे वा नाभयथा
 अमृक कण्डु हलप्राप्ति पूर्वकथी स्वष्टदेवता प्रीत्यु
 र्थं भानदीय पादस्त्रापनं प्री उग्रचक्षु चर्चन कर्तुं॥ ॥

पूर्ववत् प्री स्वष्टदेवता प्रीत्यर्थं भानदीय महारु मी
 नार्चय्य प्री स्वष्टता पूर्वकथी उग्रचक्षु चर्चन कर्तुं॥ ॥
 जलः अधन॥ आचन॥ सूर्यार्घ्यं॥ अं अश्याभित्तमास
 अह्नोपकृतवम्पीति ध्ये॥ इत्यादि॥ भानदीय महानव
 मी पार्चय्य यथा अमृक कण्डु हलप्राप्ति पूर्वकथी स्वष्ट
 देवता वार्हस वलि सहित प्री स्वष्टदेवतादि पूर्वकथी
 उग्रचक्षु चर्चन कर्तुं॥ ॥ यवतिल कुशगंधाक्ष
 त कुसुम जलान्यादाय संकल्प॥ अं अश्यादि॥ भान

ॐ अथादि॥ भवनदीयविजयादमीपावत्थ यथाभक्तकभुग

४४

मकगुङ्गा॥ सिंहसनगतादवी पश्यानी
ठक्तिगव्यती॥ महामहिषमातृख-
दव्या॥ पादनयिगिनी॥ भूलनमहिषाघा-
टवक्रमत्तत्थेवच॥ काधनूपावतानी
च॥ झालातूपक्तिगव्यती॥ वक्रात्मा मा-
द्विन्दच॥ पूजनीयात्महव्यती॥ ॐ

हलपाफर्थी॥ स्वददवतादिधीउग्रचलादव्यर्जनकुडी

ॐ अथादि॥ भवनदीयस्वजगृहतेजन्नेचुर्थीकर्मधी

४५ यमानासदाइर्ज॥ नमामिमवदवता॥

॥ भानपुर्वीपापूजा॥ ॥ आवाहन॥ ॐ

ॐ पुम्बव्यर्थेवहागक२ वृहतिष्ठ

ॐ २ वृहसन्निताएव २ वृहसन्नि

ॐ नृक्षोएव २ ममपूजागृहात्॥ ॐ अ

वगुञ्जनी॥ गालयय॥ दिग्वन्धनी॥ यानि

स्वददवतादिधीउग्रचलादव्यर्जनकुडी॥ ॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30

35

५ मूढादर्भयः॥ ॥ जेग दुम उम्वपय्य
॥ गत्याईनमः॥ ॥ उषा दुम्वः स्वाहा॥
॥ रूदमाचमनीयं स्वाहा ॥ ॥ रूदमानि
यनमः॥ ॥ जेग दुम उम्वपय्य रू
दचन्दन-विलप-म-वीनरुस-वी
नमाहनी-वीनारु यू नपुष्यनमः॥

४ ॥ ॥ गृह्णति॥ जेग दुम श्रीरग्वती श्री
चलिकाशायनी गृह्णति उम्वपय्य पापू
॥ ३ ॥ ॥ उर्ववर्तिगृह्णति स्वाहा॥ यानिम
दा॥ विन्द॥ गतवक्त्राद्यादिपूजनं॥
जेग उर्ववक्त्राद्यादिपापू॥ जेग कैमाह्व
य्यपापू॥ जेग चैकोमाय्यपापू॥

४८ ॐ गं टं वे सु व्यो पा पू ज्ञा ॥ ॐ गं तं वाना क्षे पा
पू ज्ञा ॥ ॐ गं पं रं द्रा ल्धे पा पू ज्ञा ॥ ॐ गं यं
चा मुखे पा पू ज्ञा ॥ ॐ गं मं महा ल क्ष्मि पा
पू ज्ञा ॥ ॐ गं मूं विष्णो र्वादि मातृ का ग
ला ला व धू लिं गं कृ २ स्वा हा ॥ वि न्द
॥ वृं ति उ धू म्ब व नी पू ज्ञा ॥ ॥ तथा

४९ षट्काल पू ज्ञ नी ॥ ॐ गं कौ ना ज प दं द द या
य न म ॥ ॐ गं कूं उग्र च ल्मि न स स्वा हा
॥ ॐ गं नि प्र म दं ती मि खा ये व य दू ॥ ॐ गं
कूं स दान कृ २ क व चा य कूं ॥ ॐ गं र्वा
मां जं स १ न रु ग या य वो य दू ॥ ॐ गं मृ श
ह न अ म्ना य रु दू ॥ वृं ति षट्काल पू ज्ञा

५०

॥ गगनचक्रकायपूजन ॥ ॐ शक्रां
 कृकं कृपाताय पाप ॥ ॐ गंगो
 गुंगं क्लृप्तगल्लयनाय पाप ॥
 ॐ शक्रां कृलपुवदकनाथाय पाप
 ॥ ॐ शक्रां यागिनीयाय पाप ॥ ॥ ग
 गादानपूजन ॥ ॐ लोलो लूलूमो रुडा

५१

यवजहस्माय सुनाधिपतय नमः ॥ ॐ
 नां नो नो मां अमय भक्तिहस्माय नमः
 धिपतय नमः ॥ ॐ मां मां मां मां
 यमाय दहस्माय सुनाधिपतय नमः
 नमः ॥ ॐ शक्रां कृकं कृकं कृकं
 खजहस्माय नाक धू साधिपतय

ततश्च समस्ति पूजा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो नैऋतवायव्यवृक्षाय पाश्र्वाय

स्वायकुलाधिपत धृत यत्नमशानेन

यो यो यू य्वाय् अक्षर हस्तपत्र

नाधिपतय नमः ॥ नै ॥ सो सो सु सु

कृवनायगदाहसुयधनाभिपत

अनमः॥ ओं ह्रीं क्लीं श्रीं नमः

नन्दवीनाधिपतय स६ श्रीमहा विद्यानाऊपनीसां

गंसायुर्ध्वं सदाहना सपत्रिवानी सामुचनीष्टीमहाकाल

५३ शिखलहस्तस्य सर्वद्वताधिपतयत

म४॥ नमो भूधर्मै चकह स्थायपाला

धियतथनम॥ नुं५ उं उं द्वयिकमल

लहकायस्वर्गशिपतयनमु३॥॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धीर्यचक्षुः हृदयकाथेवलिङ्गक

नवसहिगीश्रुतिग्रन्थे श्रीपाप ॥ ३॥

स्वाहा ॥ विद्महि ॥ ततः सिद्धिलक्ष्मी
 पूजनी ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 कौंभिक ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 स्वाहा ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 मिका ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

ॐ नमः ॥ सिद्धिलक्ष्मी नवाक्षरी मन्त्रस्य नमः ॥

ॐ नमः ॥ सिद्धिलक्ष्मी देवता ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

चतुर्वर्गसाधनविनियोगः ॥ १ ॥

१६ इति श्रुता पत्नी विंशत्या द्विर्द्विमुखानिवे
॥ यद्यस्यार्द्धार्द्धं तजालि शुद्धसूटिकस
न्निही ॥ कुन्दसदृशं तूपां हानकयू
नमल्लिता ॥ शिथूलं वनदं घटा पत्र
शुखदा इमवच ॥ वामवाङ्ममसा
का आयुधातिचनान्मखा ॥ अङ्कुष

१७ मरुयं मरुखकुपार्चमवच ॥ दक्ष
वाङ्मतामका वासनाभिवक्षार्थ
तः ॥ अथ द्रुपदवाक्काय कर्तुका
मध्यसक्तिता ॥ अवन्मत्वा महादेवी
सिद्धिलक्ष्मीनमाम्पहं ॥ अतः पूष्यपा
पूषा ॥ आवाहनादिचन्दनाक्षरपूष्य

५८

नमः॥ गुरुति॥ ॐ कौं कौं हौं कौं कौं
म० श्री सिद्धिलक्ष्मी देवी श्री पा पूजा॥ ७
वैवलि॥ विन्द॥ ॐ कौं श्री कौं श्री सिद्धि
लक्ष्मी देवी पा पूजा॥ ॐ गुरु नमो गुरु
ती सिद्धिलक्ष्मी देवी रुद्र स्वाहा॥ ॐ
सिद्धिलक्ष्मी नमः॥ ॐ कौं कौं हौं कौं कौं

५९

नमः॥ ॐ वैवलि गुरु रुद्र स्वाहा॥ काल मूडी
दर्शय॥ विन्द विन्द॥ ॐ सिद्धिलक्ष्मी पू
जा॥ ॐ गुरु मूर्ती पा पूजा॥ अथान
वज्रवती श्री॥ ॐ श्री वैवलि॥ ॐ गुरु रुद्र
यादि मूर्ती रुद्र पा पूजा॥ वज्र देवी पा
पू॥ माह॥ कोमा॥ वेष्म॥ वानासी॥ रुद्रा

६०

॥ चामुखा ॥ महातक्की ॥ जयाथेपापू ॥ वि
 जयाथे ॥ अरु ॥ अरुप ॥ अरु ॥ अरु ॥ मा
 ह ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥

६१

थेपापू ॥ वलि ॥ विन्द ॥ उग्रवल्हा ॥ कम-
 मूल-निर्वाणपूजा ॥ ॥ तथा कुरुपूजनं
 ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥
 अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥ अरु ॥

६२

जिनगादिव्यरूपिणी॥ मदिनानन्दचेतन्या
 दम्भाद्यापुञ्जधानिनी॥ खड्गशिखूलवङ्ग
 श्रु. दिलिर्ममञ्जलीतथा॥ गदापद्मवनपा
 ॐ. सव्यहस्तविनाजिता॥ कृतकाङ्क्षध
 ष्ठाच. कपालखट्वाङ्गकंव्या॥ नीलाक्ष
 लार्यविन्द. वामहस्तविधानिनी॥ दि

६३

व्यनलकृताशप. हमारनलद्वयिता॥ स्व
 तपन्नासनादवी. वर्द्धपद्मासनस्त्रिणा॥
 पुर्वभावा महादेवी. वानुषीदिव्यरूपि
 णी॥ ध्यानपूर्यपापूजा॥ आवाहनादिच
 दनाकृत॥ श्रुति॥ जे. ग. म. पा. ल. न. वा. न.
 दशी महाविद्यानाङ्गवनीम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

६४

कूलकूफायपापू॥३॥ॐॐॐॐॐॐॐॐ
 नूँकौँकौँकौँक०पुस्तन२धान२तन
 तन२तुपवत२पचत२कह२वम२ध
 म२घाटय२विघातय२विघि२कूँ३
 रुदूँकौँकुमानीविचयीवान्नीदि०येन
 म०॥ॐॐवलि॥विन्द॥ॐॐअधानवज

६५

वतीभितपूजा॥ॐॐवौहदयादि६॥नूच
 णादि८॥जयादि८॥वक्काभादि८॥ॐॐ
 वलि॥यातिमूडा॥विन्द॥ॐॐकूमार्च
 नी॥ ॥ ततासगुधपूजन॥ॐॐआधना
 दि८॥ॐॐॐॐॐॐॐॐअपत्कामादिअष्ट
 चिनजीत्या ॐॐॐॐॐॐॐॐपापू॥३॥वलि॥

20

15

10

5

0

cmts.

5

10

15

20

25

30

35

६८

धनुर्मन्त्रा॥ विन्द॥ इमाता पूजा विष्णुमाल
का॥ ॥ तथा वलि प्रदानं॥ दगुलि वलि
मालका॥ हुं उकादि॥ नमो नमो नमो नमो
उं उं नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
पूर्व पीठधिका नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
महाभक्तधियपतय स्वर्णकि सहिताय

६९

स्वपनिवानाय नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
पञ्चलिवलिगुक्तं नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
सर्वार्थसिद्धिददस्व नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
स्वाहा॥ नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
यपीठधिका नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो नमो
यमहाभक्तधियपतय स्वर्णकि सहिताय

६५

नायस्वपनिवानायञ्जस्मदादीनीसर्व
 भर्त्तिकुन्तस्वाहा॥ उँ^३ञचक्रुमञ्
 चवर्जयाम्यपीभधिकान्त्रञ्मिवताल
 महाहेनवाय०॥ मय्यपूर्ववत्॥ उँ^४ञट०
 उठलटवर्गनेऋयपीभधिकान्त्रञ्
 म्निजिक्महाहेनवाय०॥ उँ^५ञगथदधन

६६

तवर्जवान्भपीभधिकान्त्रकालाकमहाहे
 नवाय०॥ उँ^६ञपरुवरमपवर्जवायुव्यपी
 भधिकान्त्रकापालीममहाहेनवाय०॥
 उँ^७ञयनतस्यवर्जउठनपीभधिकान्त्र
 चकपादमहाहेनवाय०॥ उँ^८ञमसह
 भवर्जव्हीभनपीभधिकान्त्रहीमनूप

[illegible]

७१
यञ्ज्वक्त्राभीभक्तिसहिताय प्रयागक्षेत्र
धिपतयभंगयसगलपतिवानाय ॐ
प्रम्यधूपदीपनेव्यद्यवलिंगकृत्स्वाहा
॥ नमः ॐ ह्रीं नमः नमः नमः नमः नमः
भक्तिसहिताय वानाभीक्षेत्रधिपतय
०॥ नमः पूर्ववत् ॥ नमः ॐ नमः नमः नमः नमः

७२ चंकोमानीभकि सहिताय कालक्षणाधिप
तय ० ॥ उँ गं चं चं काध ह न वाय टं वेयु
वीभकि सहिताय अट्टहासक्षणाधिप त
य सांगाय ० ॥ उँ गं ६ ७ उं म डु ह न वाय
तं वानाह्येभकि सहिताय जय कीक्षणाधि
पतय ० ॥ उँ गं उँ उँ कपाल ह न वाय पं

७३ इन्द्राणीभकि सहिताय चनिगुक्षणा
धिपतय ० ॥ उँ गं उँ उँ हीमल ह न वाय
यं चामुक्षणाभकि सहिताय गुकामुक्षणा
धिपतय ० ॥ उँ गं उँ उँ ४ संहान ह न वाय
भं महालक्ष्मीभकि सहिताय दविकाट
क्षणाधिपतय ० ॥ उँ गं हं हं सैल वानुली

महादेववाय स्वभक्तिमहिताय महाक्ष
 धिपतय० अर्घ्यपूर्ववशा ॥ इति पुयाग
 दि॥ ॥ तता अभिताज्ञादि ॥ नै० ग० म० अ
 भिताज्ञादेनवायवर्तिगृह २ स्वाहा ॥ नै
 ० ग० म० नृदेनवाय० अर्घ्यपूर्ववशा नै० ग० म०
 च ॥ नृदेनवाय० नै० ग० म० काधदेनवा ॥

य० नै० ग० म० उन्मडदेनवाय० ॥ नै० ग० म० क
 पालदेनवाय० ॥ नै० ग० म० हीमल ॥ नै
 नवाय० ॥ नै० ग० म० सहा ॥ नृदेनवाय
 ० ॥ इति अभि ॥ ताज्ञादि ॥ ॥ ततावका
 धादि ॥ नै० ग० म० अर्घ्यपूर्ववर्तिगृह २ स्वाहा
 ॥ नै० ग० म० क० माहवनी ॥ नै० ग० म० च० कोमानी ॥ नै

७६

गटवेष्टुये०॥ नैग सैवानाक्षे०॥ नैग पं० द्र
 ल्ये०॥ नैग यंचामुक्तये०॥ नैग भीमहा ल
 क्ष्मे॥ वृतिवक्रास्मादि॥ ॥ गताज्यादि
 ॥ नैग जयाये वलिगृह्णस्वाहा॥ नैग विज
 याये०॥ नैग अजिताये०॥ नैग अर्पनाजि
 नाये०॥ नैग जम्भये०॥ नैग माहये०॥ नैग

१)

आकर्मल्ये०॥ वृतिज्यादि॥ गताद्रवचक्षु
 दि॥ नैग अर्जुनद्रवचक्षुये वलिगृह्णस्वा
 हा॥ नैग वृं वृं पचक्षुये॥ नैग उं उं चक्षुअ
 ये०॥ नैग नै नै चक्षुनायिकाये०॥ नैग उं
 उं चक्षुये०॥ नैग नै चक्षुवये०॥ नैग उं उं च
 क्षुत्रपाये०॥ नैग अर्जुन अर्जुन चक्षुकार्ये०

७८

॥ वृत्तिरुदचछादि ॥ ॥ गतासमयवर्ति
 ॥ उँ० सर्वपीपपीभनि. दानप्रदानभव
 च ॥ क्षणपक्षगसंदहा. सर्वदिग्गगसंस्क्रि
 ता॥ यागिनीयागवीनन्दा. सर्वगगसमा
 गता॥ वृंदपर्वमहाचक्र. श्रीनाथवन
 दामम॥ यल्लुकासासनदेवी. गुनपादा

७९

चर्चनता॥ सर्वसिद्धिपसादाम. देवीतया
 हवत्सदा॥ वीनाभयागिनीनाथ. अविष्म
 कीमहीतला॥ तत्तत्ताकमर्तिदवि. सम
 याचालकलक॥ अगिस्मृतिमन॥ प्रष्टि
 मासमदा॥ स्किडीवित॥ निककयतुदृष्टा
 ना. यागिनीगलसंकला॥ उँ० कानादिमृ
 यपीभ. मुयमालापकीर्तिता॥ उँ०

25

15

10

5

0

CMTS.

5

10

15

20

25

30

3

८०

धीधाउसीदाहा दसासुविदभसुच॥मही
 पालालवक्त्रा॥सर्वस्त्वानाकनयुच॥यागि
 नोथागयुक्ता॥सुश्रुतिश्रुतिसाधका॥वीनक
 र्मसुवीनद्रा॥मश्रुतिश्रुतिकेदवता॥सिद्धा
 श्वपुत्रकाचार्या॥साधकाक्षितिसायिन॥न
 गनवाधग्रामका॥अतम्यासासनिदय॥वापी
 कूपेकवृक्षवा॥भभानमाहमकुल॥नाना

८१

रूपधनाद्रूपधनान्यपि॥वदज्ञविविधानिच
 ॥मचसर्वपिसंशुद्धा॥वलिगृहकुसर्वग
 ॥भनभानाहंतमी॥सर्वमनकुलपदी॥
 पातर्बजन्ममाकर्म॥यत्कनिकाभियत्कर्त
 ॥वलिपुष्पपुदानन॥सुकुष्टाममचिकिका
 ॥सर्वकर्माभिसिद्धिनु॥सर्वदायापुसाकु
 भा॥भिवभकिपुसादाम॥कुकानाहृतमाम्य

५२

ह्रीं ॥ इति समयं वति ॥ धूपदीपने वद्य ॥ द्वा
 वतर्पणं ॥ पुतिष्या ॥ ज्ञाप ॥ ह्रीं ॥ श्रीं ॥ ह्रीं ॥
 ॥ ह्रीं स ॥ श्रीं ॥ श्रीं उग्रचक्र ॥ ॐ ह्रीं स ॥
 काश्यायनी ॥ श्रीं ॥ श्रीं उग्रचक्र ॥ ॐ ह्रीं
 ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः ॥ श्रीं ॥ ह्रीं स ॥ कृष्णा ॥
 वृद्धं जपेत् ॥ स्वाहा ॥ दृष्टं तत्कृति क्रतिया
 उपसमर्पणयाय ॥ मङ्गलदयकाशं ॥

५३

श्रीगुरुभ्यां नमः ॥ अखण्डमङ्गलाकारं ॥ वन्द
 सदा ॥ श्रीमासत ॥ सिद्धुत्तमां ॥ अक्षमानका ॥
 ह्रीं श्रीपूर्वाधिका नो अत्रल तनिलिङ्गकालनाग
 एवानीति पुनीकृष्टिकाख्या नवनवकधिया
 सिद्धिलक्ष्मीपनाथी ॥ एतानाख्यापनाख्या
 शिषुवनरुतनी नाङ्गनाङ्गपनीत्वा मकासा

८४
नेकतूपासकलसुखकंती नोमिदविंकुमारी
॥ कोमानीया ॥ चक्षु मूढमति इक्षयन कवीर्ज
हत्वानिर्भुंरपुननवचक्षुंरस्य ॥ हकिम्म
प्रयुदह नार्चितलाकनाथ सामभिर्यददु
भक्तिविनानीया ॥ उग्रचक्षुया ॥ लाक्षासिन्द
नवर्क्षुः जवकुसुमनिहा उकवकातिनगा
॥ साक्षादभ्याशु ककि अतिहल कधना वि

८५
इकापालहस्ता मसिंहस्का सोम्यस्य ॥ सकल
जयपदा सर्वसिद्धार्थकालीनेलाक्ष पूजा
नीया सकल लयहनीहृदयदेवतमस्तु ॥ कुरु
या ॥ अश्वत्थामावलि व्यास ॥ माहामाया ॥
श्रीसर्वर्क्षु ॥ रुममुति ॥ जथावाक् ॥ अर्ग
धादि ॥ नमस्कान ॥ वाकनकायदवर्क्षु कोमा
नीर्क्षु ॥ दवाभीर्वादि ॥ उकातकति ॥ चन्दनसि

८६ नूनसुगुलभीर्वाद्यवर्गं॥ तर्प्यती॥ याचकं
॥ कीमानी विसर्जनी॥ अयसकाय॥ वलिविस
र्जनी अयसवाय॥ ॥ देवस्तुत्या सलिकाय॥
वलिविसर्जनी॥ सूर्यसाक्षी॥ वृत्तिकुमानी पूजा
॥ श्रीनपालसम्बत ८८० कार्तिक शुक्लया ८
तिया शुक्लवानध्वकुरुदेवसिद्धिमानसिंह
थअकंस पूजायायतवायधनकाशलाभुर्ही॥